Research Paper

Volume : 2 | Issue : 5 | May 2013 • ISSN No 2277 - 8179

राष्ट्रनायक महामना मालवीय

History

KEYWORDS :

Dr. Manju Sinh | Assistant Professor(History), Rashtriya Sanskrit Sansthan (D.U) Bhopal Campus, Bhopal (M.P.)

ABSTRACT

मालवीय जी का जन्म प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (१८५७) के चार वर्ष बाद इलाहाबाद में २५ दिसम्बर १८६१ में हुआ था। धर्म में आस्था, कर्मठता, निर्भीकता, सन्तोष -वृति आदि गुण अपने माता-पिता से विरासत में प्राप्त थे।

इनकी प्रारंभ की शिक्षा एक संस्कृत पाठशाला में हुई, इसके बाद बी.ए. परीक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय में १८८४ में पास किया। ये छात्रावस्था में भी अपने देश व समाज की सेवा में रूचि लेते थे, पढ़ते समय ही इन्होनें ''साहित्य सभा'' एवं ''हिन्दू समाज'' की स्थापना की।

महामनाजी बहुत कुशल अधिवक्ता व पत्रकार भी थे। इन्होने १८९२ में इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत भी की, इसी अधिवक्ता रूप में ५ फरवरी १९२२ ई. क्रांतिकारी देश भक्तो द्वारा गोरखपुर के चौरी-चौरा थाना में आग लगा दी थी, जिसमें २२ सिपाही झूलस गये थे। इस मामले में गोरखपुर न्यायालय ने १७० अभियुक्तो को फांसी की सजा सुनाई थी। यह मामला जब इलाहाबाद कोर्ट में आया तो इस मामले की पैरवी करने के लिए कोई भी तैयार नही था, तब मालवीय जी ने इस मामले को अपने हाथों में लेकर १५० अभियुक्तो को मुक्त करा लिया, यह भी एक मालवीय जी का ही राष्ट्रनायक रूप था।

इन्होनें संपादकीय कार्यो से भी भारत की आजादी के मशाल को जलायें रखा। इन्होने कालाकाँकर के राजा द्वारा प्रकाशित दैनिक समाचार ''हिन्दुस्तान'' का भी सम्पादन किया।

मालवीय जी एक जननेता के रूप में भी प्रसिद्ध थें। इन्होनें उस समय के तिलक और गोखले जैसे राजनेताओं का भी मार्गदर्शन किया, तथा महात्मा गांधी जी के भी प्रेरणा स्वरूप बने, इसके संदर्भ में 'अन्दलीवे हिन्द नजर' ने कहा है कि

''सर असर मातम है दुनिया, जिस तिलक की मौत पर, सच तो यह है, उस तिलक का रहनुमा है मालवी॥

गोखले ने जो दिया था, हमकों पैगामें अजल, ऐ 'नजर' उस इक्तिदा की, इन्तिहा है मालवी''।

यही नही मालवी जी कट्टर हिन्दु होने के बाद भी कभी मुस्लमानों को अपने दिल से दूर नही मानते थे, इसपर भी 'नजर' ने कहा है कि

''दिल खुदा का घर है, उस घर में बसा है मालवी हम पुजारी है, हमारा देवता है मालवी ॥

ये रूप भी मालवी की बहुमुखी प्रतिभा को प्रदर्शित करती है।

उन्होने शिक्षा शास्त्र के सिद्धांतों की विवेचना नही की, किन्तु इन्होनें १९११ में बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के नाम से काशी में संस्था स्थापित की, फिर इनके अथक प्रयास से ४ फरवरी १९१६ ई. में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास हुआ। इससे इन्होने व्यवहारिक शिक्षा शास्त्री होने का संसार को परिचय दिया। इसी प्रतिभा पर संसद के एक वरिष्ठ सदस्य कर्नल बेन के शब्दों में ''मालवी यदि राजनीति में न आते तो वह शिक्षा के क्षेत्र के सबसे बडे नेता होते, यदि काशी हिन्दु विश्वविद्यालय का भरण-पोषण उन्हें न करना पड□ता तो उन्हें एक राजनैतिक समझा जाता''।

इसी प्रकार इनके अथक कार्यो पर इनको राष्ट्रनायक कहना उचित संबोधित होता है। इनके निस्वार्थ सेवा भावना इनका त्याग-वृत्ति और दीन दुखियों के प्रति सहानुभूति बन्दनीय है। मालवी जी ने करोड़ो रूपयें एकत्र किये किन्तु स्वंय सदा निर्धन ही बने रहें। वे भारत के अभिमानी पुरूष तथा राष्ट्रनायक थे। इन्होने भारत को हर रूप में अपने जीवन की सेवाऐं दी, और भारत को इन पर अभिमान है। राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त के शब्दों में :- '' भारत को अभिमान तुम्हारा, तुम भारत के अभिमानी।

पूज्य पुरोहित थे हम सबकें, रहे सदैव समाधानी॥

तुम्हें कुशल याचक कहते है, किन्तु कौन तुम सा दानी ?

अक्षय शिक्षा सत्र तुम्हारा, हे ब्राह्मण, ब्रह्मज्ञानी'' ॥

यह महान राष्ट्रनायक इस देश की सेवा करते हुए ८४ वर्ष की आयु में गंगा तट पर स्वत: पद्मासन लगाकर समाधि ली थी। इस राष्ट्रनायक को पूरे देश तथा हमारी तरफ से सत्-सत् प्रणाम।

महान देशभक्त और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदनमोहन मालवीय के नाम से भला कौन अपरिचत होगा। उनके नाम के साथ 'महामना' का प्रयोग उचित ही है। महामना का अभिप्राय होता है-महान मन वाला। उनका महान मन सदा कल्याण ाकारी कार्यो में लगा रहता था। शिक्षा, समाज सेवा, देशभक्ति ओर धर्म आदि के क्षेत्रां में उन्होनें उल्लेखनीय कार्य किया।

मदनमोहन मालवीय सफेद, भारतीय वेशभूषा धारण करने में गौरव का अनुभव करते थे। सिर पर पगड़ी, गले में दुपट्टा, अचकन, धोती या चूड़ीदार पायजामा, हाथ में छड़ी और पावों में नागर जूते वे हमेशा धारण करते थे।

मालवीय जी का जन्म इलाहाबाद में २५ दिसमबर सन १८६१ में हुआ। इनके पिता का नाम पण्डित ब्रजनाथ व्यास और माता का नाम श्रीमती मूनादेवी था। मूल रूप में यह पहरवार मालवा का निवासी था और प्रयोग में बहुत दिनों से रह रहा था। और मल्लई परिवार के नाम से प्रसिद्ध था। महामना मदनकोहन जी ने मल्लई को शुद्ध करके मालवीय कर दिया। धर्म में आस्था, कर्मठता, निर्भीकता, संतोष वृत्ति आदि गुण मालवीय जी को अपने माता पिता से विरासत के रूप में मिले थें।

मालवीय जी की शिक्षा प्रारम्भ में एक संस्कृत पाठशाला में शुरू हुई। बाद में वे इलाहाबाद के गवर्नमेण्ट हाई स्कूल में प्रतिष्ट हुए। वहाँ पर उन्होंने अंग्रेजी का अध्ययन बडे परिश्रम से किया। सन् १८८१ में अपने म्योर सेण्ट्रल कालेज से एफ. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और सन् १८८४ में कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. की परीक्षा पास की इस परीक्षा में आपने विशेष योग्यता प्राप्त की।

छात्रावस्था में भी आप देश व समाज की सेवा में रूचि लेते थे। पडते समय ही अपने साहित्य सभा एवं हिन्दु समाज की स्थपना की थी। और उसके माध्यम से समाज की सेवा में रूचि लेने लगे थे।

१८८७ ईस्वी में म्योर सेंट्रल कॉलेज को केन्द्र मानकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई तो उन्होनें हिन्दू छात्रों की सुविधा के लिए छात्रावास के निर्माण का निश्चित किया। सन्१९१०३ ईस्वी में निर्मित मैकडॉनल हिन्दू छात्रावास मालवीय जी के प्रयास का फल है।

इसी बीच भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की १८८५ ईस्वी में स्थापना हुई जब काँग्रेस का दूसरा अधिवेशन १८८६ में कलकत्ता में हुआ तो संस्कृत प्राध्यापक पंडित आदित्यराम के साथ मालवीय जी भी वहाँ गये।

इस अधिवेशन में दिये गये मालवीय जी के ओजस्वी भाषण ने उनका नाम देश के कोने-कोने में फैला दिया। उस समय उनकी आयु बहुत कम और कद इतना छोटा था कि भाषण के समय काँग्रेस के संस्थापक मिस्टर ए. आर. ने उन्हें कुर्सी पर खड़ा करवा दिया ताकि लोग उन्हें देख भी सकें। भाषण के दौरान लोगो ने २२ बार तालिया बजाकर उनका स्वागत किया।

काँग्रेस पार्टी में उनकी साख जमा दी। अगली बार प्रयाग काँग्रेस अधिवेशन १८८९ के लिए मालवीय जी को स्वागत समिति का मंत्री बनाया गया। उनकी अद्भूत संगठन क्षमता के कारण ही पुन: प्रयाग में १८९२ में काँग्रेस अधिवेशन का पूरा भार मालवीय जी को सौंपा गया।

काँग्रेस का दूसरा अधिवेशन १८८६ में कलकत्ता में हुआ था तो वहीं पर आपका परिचय कालाकंकर नरेश राजा रामपालसिंह जी से हुआ। उन्होंने मालवीय जी को अपने दैनिक समाचार पत्र हिन्दुस्तान का सम्पादक बनकर कालाकॉकर बुलाया। मालवीय जी ने सन् १८८७ से १८८९ तक हिन्दुस्तान का सम्पादन किया और समपादन के साथ साथ आप वकालत भी पडते रहे सन् १८९१ में आपने वकालत पास की और परिश्रम से सन् १८९२ में इलाहाबाद हईकोर्ट के वकील बन किये।

मालवीय जी को वकालत में भी सफलता मिली और उनकी विलक्षण प्रतिभा की चारों ओर ध ूम मच गई। इसके बाद उनका जीवन पत्रकार जननेता एवं कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में बीता। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी।

विश्वविद्यालय के कार्यो में के कारण उन्हें जहाँ अभ्युदम का सम्पादन छोड़ना पड़ा वकालत की प्रतिभा को २० वर्षो के बाद एक बार पुन: दिखा दिया। ५ फरवरी, १९२२ ई. को क्रान्तिकारी देशभक्तिों ने गोरखपुर के चौरा-चोरी काने में आग लगा दिया दी थी। जिसमें २१सिपाही झुलस गए। गोरखपुर के न्यायाधीश ने सवा दो सौ अभियुक्तों में से १७० को फांसी की सजा दे दी। मामला प्रयाग उच्च न्यायालय में पहुँचा कोई पैरवी करने को यहाँ भी तैयार नहीं था, मालवीय जी ने इस मुकदमें को अपने हाथों में ले लिया। उन्होनें १५० अभियुक्तों को छुड़ा दिया मुख्य न्यायाध ीश ने उनकी प्रशंसा की-''सुंदर रीति से इस मुकदमें की बहस पर आप को बधाई देता हूँ आपके अलावा कोई भी व्यक्ति इतनी अच्छी तरह से इस मुकदमें को प्रस्तुत नहीं कर सकते थे। यह भी एक मालवीय जी का ही राष्ट्रनायक रूप था।

मालवीय जी का जन्म उस समय हुआ जब देश में चारों ओर राजनीतिक षडयन्त्र चल रहे थे। और देश पराधीनता की बेडी में जकड़ा हुआ था। अंग्रेजी आंतकवाद का चारों ओर बोलबाला था। भरतीय धर्म, संस्कृति एवं परमपरा का ह्रास हो रहा था। ऐसे समय में जनता का मार्गदर्शन

अत्यन्त आवश्यक था। मलवीय जी ने अपने कार्यो से जनता के लोकप्रिया नेता का पद प्राप्त किया। वाइसराय की कार्यकारिणी और प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा के ते सर्वप्रथम भारतीय सदस्य थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन भारती भवन हिन्दू बोर्डिंग हाउस, सेवा समिति आदि अनेक संस्थाओ की उन्होंने स्थापना की। उस समय कांग्रेस के माध्यम से जानता का नेतृत्व उन्होंने करना आरम्भ किया । किन्तु कभी कभी कांग्रेस की कुछ नीतियों का उनहोंने विरोध भी किया। हिन्दू संगठन की वे उन्नति करना चाहतें थें हिन्दू महासभा के तो वे जन्मदाता ही थे। किन्तु मुसलमानों के प्रति उनके हृदय में कभी भी द्वेष नहीं रहा। इसीलिए तो बिसमिल इलाहाबादी और नजर सोहानवी जैसे लोकप्रिय एवं ख्याति प्राप्त उर्दू कवियों ने मालवीय जी के सम्बन्ध में काव्य रचना करके अपने को धन्य समझा।

मालवीय ने तिलक और गोखले जैसे राजनीतिज्ञों का मार्गदर्शन किया और महात्मा गॉधी जैसे राष्ट्र पुरुष को भी समय समय पर प्रेरणा दी। अन्दलीवे हिन्द नजर की निम्नलिखित पंक्तियॉ ध्यान देने योग्य है।

सर असर मातम है दुनियॉ जिस तिलक की मौत पर,
सच तो यह है, उस तिलक का रहनुमा है मालवी॥
गोखले ने जो दिया था, हमको पैगामे अजल,
ऐ 'नजर' उस इब्तिदा की, इन्तिहा है, मालवी।

मालवीय जी को हिन्दु और मुसलमान समान रूप से प्यार करते थे। कायदे आजम मुहम्मद अली जिन्ना जैसे साम्प्रदायिक नेता भी उनका लोहा मानते थे। और अनेक मुसलमान उनको आराध्यदेव की तरह पूजते थे। नजर के शब्दों में

दिल खुदा का घर है, उस घर में बसा है मालवी, हम पुजारी हैं, हमारा देवता है मालवी ॥

यही नहीं नजर तो यहॉ नजर हैं कि -

ईटों का पत्थर से हम देते नहीं हर्गिज जवाब, वह बुरा है आप, जो समणे बुरा है मालवी।

मालवीय जी के कांग्रेस के दो अधिवेशनो में सभापतित्व किया, गोलमेज कांफ्रेंस में भाग लेने के लिए विलायत गए, अनेक अन्य स्थानों पर भारत का प्रतिनिधित्व किया और देशवासियों को अज्ञानान्धकार से निकालने के लिए श्विविख्यात विश्वविद्यालय की अन्होंने स्थापना की। सचमुच वे एक महान् जन नेता थे।

अपने उद्देश्य को साकार रूप प्रदार करने के लिए एवं देश में शिक्षा का प्रसार करने के लिए मालवीय जी ने काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय का फरवरी १९१६ को १२ बजे वायसराय लार्ड हार्डिंग ने इस विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया नींव में एक ताम्रमत्र रखा है जिसमें २० श्लोक लिखे हुए हैं। पहला ही श्लोक है

धर्म सनातनं वीक्ष्य काल
वेंगेल पीडितम्।

भूतले दुर्व्यवस्थं च व्याकुलं
मानव कुलम्॥

अर्थात सनातन धर्म को काल के वेग से पीडित तथा सम्पूर्ण भूमण्डल के जीवों को दुर्दशा में और व्याकुल देखकर इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दु विश्वविद्यालय को सनातन धर्म के उद्धार के लिए, हिन्दू जाति को संगठित करने के लिए, भरतीय संस्कृति की सुरक्षा के लिए एवं हिन्दू धर्म ग्रन्थों के अनुशीलन के लिए स्थापित किया गया।

हिन्दू विश्वविद्यालय में व्यावसायिक शिक्षा के साथ साथ चारित्रिक शिक्षा की भी व्यावस्था की गई। इस विश्वविद्यालय के लिऐ मालवीय जी ने समस्त देश के लोगों से सभी ने हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए दान दिया।

हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना से मालवीय जी कितने प्रसन्न हुए थे। इसका अनुमान ८ जुलाई १९१६ को उनके द्वारा रची गई और गाइ निम्नलिखित रचना से लगया जा सकता है।

विश्वविद्यालय काशी!
मातु गंग पय जाहि पियावत, मूल धर्म सुखराशी।
पालत विश्वनाथ विद्या गुरू, शंकर आज अविनाशी
ज्ञान विज्ञान प्रकाशी!
गंग जमुना संगम विच देवी, गुप्त रही चपला सी।
ईस कृपा तें सोई सरस्वति, वाराणसी प्रकाशी।
तिमिर अज्ञान विनाशी।
ऋषि मुनि संग पूपमंडल सोहत, उच्छव परम हुलासी।
छेत असीस फलहु अरू फूलहु सब विधि भारतवासी॥
लहहु विद्या धन राशी।

मालवीय, जी यह मानते थे। कि चहरत्र निर्माण में शिक्षको का विद्यार्थियों पर सर्वाधिक प्रभाव प्रभव पडता है। अत: अनके विश्वविद्यालय में जो अध्यापक होते है। उन्हें प्रतिज्ञा करनी पडती है।

धर्म- शिखा मानेंगे, हिन्दू शास्त्रो को पालन करेंगे,
शिक्षा का प्रचार करेंगे, समाज कल्याण करेंगे, सदाचारी रहेंगे,
देश सेवा के साथ साथ सदाचारी जीवन व्यतीत करेंगे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय जी बीस वर्ष तक कुलपति रहे। इसके बाद कुलपति के पद पर भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक और भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधकृष्णन् आसीन हुए। स्वतन्त्रता के बाद कुछ समय तक आचार्य नरेन्द्रदेव भी उपकुलपति रहे। श्री त्रिगुणसेन के कार्यकाल में इस विश्वविद्यायल की प्रणाली में कुछ परिवर्तन हुए। इस विश्वविद्यालय का वर्तमान स्वरूप शनै शनै: बदल रहा है। युग की धारा के अनुरूप बदलना चाहिऐ किन्तु मालवीय जी के आदर्शो को इस विश्वविद्यालय में साकार रूप देने का यथासम्भव प्रयत्न अभी भी होना चाहिए।

हिन्दु विश्वविद्यालय के वर्तमान स्वरूप की संक्षिप्त झॉकी प्रस्तुत है। इस समय बनारस हिन्दु यूनिवर्सिटी में तीन संस्थान है। इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज विश्वविद्यालय में लगभग २८ संकाय है और १५० विभाग है। नेपाल स्टडीज का एक केन्द्र है, मैटीरियल साईंनियरिंग का स्कूल और बायो टेक्नालॉजी का एक स्कूल है। वनस्पति विज्ञान प्राणि विज्ञान और इंजीनियरिंग में में उच्च अध्ययन केन्द्र है, मैटीरियल इंजीनियापरिंग का स्कूल और बायो टेक्नालॉजी का एक स्कूल है। वनस्वति विज्ञान, प्राणि विज्ञान और इंजिनियरिंग में उच्च अध्ययन केन्द्र है। बायो केमिस्ट्री, भोतिक विज्ञान माइनिंग केमिकल, वनस्पति विज्ञान, प्रणि विज्ञान, इलेक्ट्रिकल इंजीनियेरिंग और धातु अभियान्त्रिक में कोसिस्ट प्रोग्राम है। भौतिक विज्ञान अभियान्त्रिकी में कोसिस्ट प्रोग्राम हैं। भौतिक विज्ञान, माइनिंग, इंजीनियरिंग, सिनेमिक बायो कैमिस्ट्री, इलैक्ट्रानिक्स, दर्शनशास्त्र, भूगोल और वाणिज्य में यू जी सी स्पेशल असिस्टन्स है। विश्वविद्यालय में एक विशाल पुस्तकालय है जिसमें सात लाख से उपर विदेशी छात्र है। लगभग दो हजार अध्यापक है। ओर लगभग पॉच हजार शिक्षणेतर कर्मचारी है। लगभग आठ हजार छात्रों के लिए छात्रावास की व्यवस्था है। लगभग तेरह सौ एकड भूमि पर विश्वविद्यालय का विशाल परिसर है। यह सब मालवीय जी की आत्मा समाई हुई है।

पार्लियामेन्ट के एक वरिष्ट सदस्य कर्नल बेन के शब्दों में मालवीय जी यदि राजनीति में न आते तो वह शिक्षा के क्षेत्र के सबसे बडे नेता होते यदि काशी विश्वविद्यालय का भरण पोषण उन्हे न करना पडता तो उन्हें एक महान् राजनीतिज्ञ समझा जाता ।

अफ्रीका से भारत लौटने पर १९१५ ई. में महात्मा गॉधी का सम्पर्क मालचीय जी से हुआ था। गॉधीजी ने लिखा हैं, मैं उन्हें ऐसा सर्वश्रेष्ठ हिन्दू मानता हूँ जो अत्यन्त आचारवान होते हुए भी विचारों से बडे उदार है द्वेष तो वह किसी से कर ही नही सकते।..... काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिलान्यास के अवसर पर मैं उनके जीवन की सरलता की झॉकी प्राप्त कर दिया था।..... उन्होनें बड़ी लम्बी अवधि तक मातृभूमि की ऐसी अनवरत सेवा की हैं जिसका हम में से बहुत कम लोग कर सकते हैं।

ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के एक सदस्य कर्नल वेजबुडने उनके बारे में ठीक ही कहा था - ''सारा यूरोप भली-भॉति जानता हैं कि भारतीय शिक्षा क्षेत्र मालवीय का कितना ऋण है, मैनें आज ऐसा दूसरा शिक्षा संस्थान नहीं देखा जो मुख्यत: एक ही व्यक्ति की कृति हैं।''

पं. मदन मोहन मालवीय मंत्र ऋषि थे ऊॅ नारायण महामंत्र उनमे श्वास प्रश्वास में बसा था। इनका जन्म १८६१ ई. में प्रयोग में हुआ था और ८४ वर्ष की आयू में गंगा तट पर स्वत: पद्मासन लगा समाधि ली थी।

उनकी नि: स्वार्थ सेवा भावना उनकी त्याग वृति और दीन दुखियों के प्रति उनकी सहानुभूति वन्दनीय है। उन्होने करोडों रूपये एकत्र किये किन्तु सवयं सदा निर्धन ही बने रहे। वे भारत के अभिमानी पुरुष थे। और भारत को उन पर अभिमान था।

को अभिमान तुम्हारा,
तुम भारत के अभिमानी।
पूज्य पुरोहित थे हम सबके
रहे सदेवि समाधानी।
तुम्हें कुशल याचक कहतें है।
किन्तु कौन तुम सा दानी ?
अक्षय शिक्षा सत्र तुम्हारा,
हे ब्राम्हण, ब्राम्हज्ञानी॥

यह महान राष्ट्रनायक इस देश की सेवा करते हुए ८४ वर्ष की आयु में गंगा तट पर स्वत: पद्मासन लगाकर समाधि ली थी। इस राष्ट्रनायक को पूरे देश तथा हमारी तरफ से सत्-सत् प्रणाम।

REFERENCE

१ महामना पंडित मदनमोहन मालवीय; एम. आई. राजस्वी द्य २ पं मदनमोहन मालवीय; संजय गोयल द्य ३ स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास ; शशिप्रभा द्य ४ महामना पंडित मदनमोहन मालवीय ; सीताराम चतुर्वेदी द्य ५ मालवीय जी के सपनों का भारत ; ई पी. वर्मा द्य